वेदोऽखिलोधर्ममूलम्

श्राद्धमीमांसा

संपादक

श्री स्वामी कपिलदेवानन्द जी तीर्थ

भूतपूर्व पं० कल्पनाथ शर्मा शास्त्रार्थ महारथी

व्याख्यान केसरी, व्याख्यानरत्न तर्कभूषण

वेदोऽखिलोधर्ममूलम्

श्राद्धमीमांसा

सम्पादक :

श्री स्वामी कपिलदेवानन्द जी तीर्थ

भूतपूर्व पं० कल्पनाथ शर्मा शास्त्रार्थ महारथी
व्याख्यान केसरी, व्याख्यानरत्न तर्कभूषण
गोशाईगंज, फैजाबाद। वर्तमान निवास,

मुमुक्षुभवन, वाराणसी।

प्रकाशक :

श्री स्वामी वलभद्रानन्द जी तीर्थ

मुमुक्षुभवन, वाराणसी

[सम्वत् २०३८ श्रावण शुक्ल १५ पूर्णिमा] [मूल्य पचास पैसा

प्रकाशक :

श्री स्वामी वलभद्रानन्द जी तीर्थ
मुमुक्षुभवन, वाराणसी ।

मूल्य : पचास पैसा

मुद्रणालय

विक्रम पञ्चाङ्ग प्रेस
भदैनी
वाराणसी ।

श्री हरिः शरणम्

प्राक्कथन

वंशी विभूषित करान्नवनीरदाभात्
पीताम्बरादरुणबिम्ब फलाधरोष्ठात,
पूर्णेन्दुसुन्दर मुखादरविन्द नेत्रात्
कृष्णापरं किमपितत्वमहम नजाने ।।

वर्तमान समय में सभी सुख चाहते हैं दुःख को स्वप्न में भी नहीं देखना चाहते, उसमें भी निरतिराशय सुख में सबका अधिक प्रेम होता है।

आधुनिक समय में जिस किसी प्रकार से भी इन्द्रिय-तृप्ति को ही वर्तमान जन्म की परम सफलता मानने वाले तथा इस इन्द्रिय तृप्ति के साधनभूत विषयों के उपभोग में ही मन लगाये रखने वाले मनुष्य उन विषयों को प्राप्ति कराने वाली अतिमहान धनराशि का किसी भी उपाय से अर्जन करना अत्यधिक पुरुषार्थ समझते है। और उससे बढ़कर दूसरी वस्तु नहीं है ऐसा मानते हैं, परन्तु त्याग और धर्म कार्य से बहुत दूर ही नही। किन्तु धर्म की निन्दा करते हैं औरों की बुद्धि में भी भ्रम पैदा करते हैं उदाहरण पित्तरों का श्राद्ध न करना। इसका प्रचार वेदों का नाम लेकर शोर मचाते हैं कि वेदों में मृतक पितरों का श्राद्ध नहीं है परन्तु वेदो में यमलोक पितरलोक का विस्तार से वर्णन है पितृलोक में पितरों के सुख का वर्णन पितृलोक जाते शमय वेतरणी नदी का वर्णन, श्राद्ध मरे हुए पितरों का ही होता है किस महीने में और किस समय में होता है।

जहाँ पितरो का श्राद्ध, पिण्डदान नही होता है वहाँ की दशा का वर्णन।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी ने अपने पिता को ऐङ्गूफल का पिण्डदान करना आदि विषय वेद शास्त्र इतिहासों में भली प्रकार से वर्णन किये गये हैं इस छोटी षुस्तिका में गागर में सागर की कहावत चरितार्थं किया गया है।

इसके लेखक श्री स्वामी कपिलदेवानन्द जी तीर्थ भूतपूर्व पं० कल्पनाथ शर्मा शास्त्रार्थ महारथी व्याख्यान केसरो तर्कभूषण हैं। शर्मा जो ने भारत के कोने २ में धर्मप्रचार किया है और नास्तिकों का समाधान किया है। शर्मा जो अपनी ८३ वर्ष की आयु में शन्यास लेकर काशी मुमुक्षुभवन में निवास कर रहें हैं, तथापि हम लोगों की प्रार्थना से (यह श्राद्धमीमांसा नाम की) छोटी पुस्तिका सरल भाषा में लिखे हैं। इस पुस्तिका को पढ़ने से यह सन्देह निर्मूल हो जाता है कि वेदों में श्राद्ध मृतक पितरों का नहीं है, वेदों में मृतक पितरों का ही श्राद्ध वर्णन हैं।

वेदों का नाम उनकी कितनी शाखाये हैं वेद के कितने अंग हैं, वेदों का अर्थ किससे लगाया जाता है यह समस्त विषय इस पुस्तिका में उघृत है।

प्रार्थी—

हम श्रद्धालु स्वामी जी के कृपापन्न—

श्री उपेन्द्रप्रतापसिंह जी, धवरुआ।

श्री बालकिशुन विनोद कुमार वस्त्रविक्रेता, गोशाईगंज।

श्री सत्यनारायन गोशाईगंज।

वैदिकज्ञान

एक विंशति शाखायामृग्वेदः परिकीर्तितः ॥

(सोतोपनिषद ३०)

इक्कीस शाखा ऋग्वेद की है।

एकशतमध्वर्युशाखा ॥

(महाभाष्य अ. १५१।२)

एकसौ एक शाखा यजुर्वेद की है।

शुक्ल यजुर्वेद और कृष्ण भेद से दो प्रकार कहा जाता है। उनमें बाजसनेय शुंक्ल यजुर्वेद है और तैत्तिरीय शाखा कृष्ण यजुर्वेद है।

साम्नः सहस्र शाखाः स्युः ॥

सामवेद की एक हजार शाखा है।

नवधा अथर्वणः ॥

म०अ० १ या १ अ० १

नव शाखा अथर्ववेद की है॥

मंत्र ब्राह्मणयोर्वेद नामध्येयम् ॥

(श्रौत सूत्र २४-१-३१)

मंत्र और ब्राह्मण दोनों का नाम वेद है॥

कल्पो व्याकरणं शिक्षा निरुक्तं
ज्योतिषं छन्द एतानि षड़ अंगानि ॥

(सी० उ०)

वेद के छ अङ्ग हैं :

१. कल्प, २. व्याकरण, ३. शिक्षा, ४. निरुक्त, ५. ज्योतिष, ६. और छन्द । इन्हीं के द्वारा वेदों का अर्थ लगाया जाता है ॥ मनमाना अर्थ जो वेदों का करेगा, अवश्य जनता को धोखा देगा वेदों की ११३१ शाखायें हैं इनमें बहुत-सी लुप्त हो गई है तथापि जो बची है इनमें ज्ञान-विज्ञान का भण्डार भरा पड़ा है वेदाङ्गों के साथ वेदों का अर्थ करने से धोखा न होगा ॥ आज कल के वेद भाष्य करने वालो से जनता सावधान ।

—संपादक

श्री हरिः शरणम्

वेदोऽखिलोधर्ममूलम्

(श्राद्धमीमांसा)

वेदों में-मृत पितरो का श्राद्ध

वर्तमान युग में धर्म से विपरीत आचरण करने वाले स्वतः धर्म विरुद्ध आचरण करते हैं, अन्य लोगों को भी वेद की दोहाई देकर वेद-विरुद्ध मार्ग पर ले जाते हैं (उदाहरण) वेदों में मृतक पितरों का श्राद्ध विधिवत लिखा है परन्तु धार्मिक पुरुषों को भी वेद का नाम लेकर धोखा देते हैं, कहते है कि वेदों में मृत पितरों का श्राद्ध नहीं है।

मैं वेदों में और धर्म शास्त्रों से यह बताने का प्रयत्न करूंगा कि वेदों में अनेक प्रमाण है कि मृतक पितरों का हि श्राद्ध किया जाय।

(ऋग्वेद में १० अ. १४ में ६)

॥ यमराज के विषय में लिखा है ॥

वैवस्वतं संगमनं यमं राजानाम् हविषादुवस्य ॥

अर्थ—सबजनो के संगमन स्थान सूर्य के पुत्र यमराज को हवि से परिचर्या करो।

(यजुर्वेद अ. १९ मं ५४)

ये समाना मनसः पितरो यमराज्ये।
तेषां लोकः स्वधा नमो यज्ञो देवेषु कल्पताम् ॥

अर्थ—जो हमारे समान मन वाले पितर यमलोक में वर्तमान हैं उन पितरों के लोक में स्वधा नाम से अन्न प्राप्त हो, यज्ञ देवताओं के तृप्त करने में समर्थ हो।

(अथर्वेद का० १८।१।१।४५)

प्रेहि प्रेहि पथिभिः पूर्याणैर्यनाते पूर्वे पितरः परेनाः।
उभाराजानौ स्वधया मदन्तौ यमं पश्यासि वरुणं च देवम् ॥

अर्थ—जिस मार्ग से तेरे पूर्व पितर मरकर गये उन यमनिर्मित शरीर यानरूप मार्गो से प्रसन्न हाते दोनों प्रकाशमान राजादेवयम और वरुण को देखोगे ॥

(अथर्वेद का० १८।४१)

यो ममार प्रथमो मर्त्यानाम । यः प्रेमाप प्रथमो लोकमेतम् ॥
वैवस्वतं संगमनं जनानां यमं राजानं हविषा सर्मर्पयत ॥

अर्थ—प्राणियों में पहिले मरा है और जिसने इस लोक को पहिले प्राप्त किया हैं उनके सुभ के लिये जनों संगमन करने वाले सूर्यपुत्र यम-राज को हवि से सत्कार किया जाता है ॥

(अ० का० १८।३१.६९)

यास्ते धाना अनुकिरामि तिलमिश्रा स्वधावतीः।
तास्ते सन्तुविभ्वी प्रभ्वीस्तास्ते यमो राजानु मन्यतां ॥

अर्थ—तिलमिश्रित स्वधायुक्त जो धान तेरो लिये है मैं छोड़ता हूँ वे अधिकाई से युक्त प्रभावयुक्त तेरे निमित्त हो उन्हें तेरे लिये यमराज स्वी-कार करें ॥

(अ० का० १८।२।१)

यमायसोमः पवते यमाय क्रियते हविः ।
यमम् यज्ञो गच्छत्याग्नि दूतो अरं कृतः ॥

अर्थ—यमराज के निमित्त सोम पवित्र किया जाता है यमराज के अर्थं हवि किया जाता है और मंत्र द्वारा अग्निदूत ही यज्ञ से यमराज के प्रति हवि ले जाता है ॥

एतत्तेदेवः सविता वासो ददाति भर्तवे
तत्वं यमस्य राज्ये वसानस्तार्यं चर ॥

(अथर्व० १८।३।३१)

धाना धेनुरभवत् वत्सो अस्यास्तिलो भवत् ।
तां वै यमस्य राज्ये अक्षिता उपजीवति ॥३२

अर्थ—सबके प्रेरक देव यह वस्त्र भरण वा आच्छादन के निमित्त तेरे लिये देता है, उस प्रीतिकारक वस्त्र को धारण किमे हुए यमराज के राज्य से विचरण करो ॥ धान प्रीतिधारक गो के समान है तिल इस धानरूपा गौ के बछड़ समान है निश्चय करके उस क्षयरहित वत्सरूप तिलवाली धान रूपा गाय को लेकर यमराज के राज्य में यह अपनी आवश्यकता को पूरी करता है ॥३२॥

अल्पज्ञ मनुष्य ऐसे भी कहते है कि गरुण पुराण में वैतरणी नदी का वर्णन है। जो वेदों में नहीं है। इस विषय में यजुर्वेद निर्णय किया है।

अश्मन्वती रीयते संरभध्वमुत्तिष्ठत प्रतर ता सखायः ।
अत्राजहीमोऽशिवाये असँन्छिवान् वयमुत्तरेमाभि वाजान ॥

(यजुर्वेद अ० ३५।मं १०)

अर्थ—अरे मित्रों निगल जानेवाली वैतरणी नदी वह रही है उसे कभी आपने सुना है यदि जानते हो और सुना है तो तैयार हो जाओ इसे पार कर जाओ। जब प्रवुद्ध जीव उसे पार कर जाते हैं तव वे कहते हैं कि जो पाप थे उन्हें हम यहाँ ही इस वैनरणी नदी में छोड़ते हैं और हम कल्याणकारक दिव्य अन्नादि भोगजाति को अथवा दैवी बल कों अच्छी तरह प्राप्त करते हैं ॥१०॥ इन पूर्वोक्त प्रमाणों से स्पष्ट यमराज यमलोक एवं वैतरणी नदो सिद्ध होता है ॥५॥

अनुपश्य यथा पूर्वे प्रतिपश्य तथा परे।
सस्यमिव मर्त्यः पच्यते सस्यमिवाजायते पुनः ॥

(क०व० १ श्रु० ६)

अर्थ—आप के पितामह पूर्वज आदि जिस प्रकार आचरण करते आये हैं उस प्रकार विचार कीजिये और वर्तमान में भी अन्य साधु पुरुष जैसे आचरण कर रहे है उसी प्रकार से उनके आचरण दृष्टिपात कर लीजिये मरण धर्मा मनुष्य धान की तरह अल्प ही काल में पकता हैं अर्थात् जरा से जीर्ण होकर भर जाता और अनाज के समान फिर जहाँ-वहाँ उत्पन्न होता है ॥६॥

बहुतों का कहना है कि जीवित पित्तरो का श्राद्ध है मरे पितरों का नहीं। अतः मैं प्रेमीजनों के लिये मृतक पितरों के श्राद्ध प्रतिपादन करने वाले कुछ वेदमंत्रों का प्रमाण यहाँ लिख रहा हूं ॥

आयन्तुनः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः।
अस्मियज्ञे स्वधया मादन्तोऽधिब्रुवन्तुतेऽवन्स्वस्यान ॥

(यजुर्वेद अ० १९ मं ५८)

अर्थ—सोम के योग्य अग्निद्वारा स्वादित हमारे पितर देवताओं के गमनयोग्य मार्गो से आवें इस यज्ञ में स्वधा के अन्न में प्रसन्न होते मानसिक उपदेश दें तथा वे हमारो रक्षा करें ।.५८।।

ये अग्निष्वात्ता ये अनग्निष्वात्ताः मध्येदिवः स्वधयामादयन्ते ।
तेभ्यः स्वराड सुनीतिमेता यथा वसन्तन्वङ्कल्पयाति ।।

(यजुर्वेद १९ मं ६०)

जो पितर विधिपूर्वक अग्निदाह से ओर्ध्वं देहिक कर्म को प्राप्त हुए हैं जो पित्तर स्मसान कर्म को प्राप्त नहीं हुए द्युलोक से मध्य में स्वधा के अन्न से प्रसन्न रहते हैं राजा यम उन पितरों को निमित्त इच्छानुसार इस मनुष्य के सम्बन्ध वाले प्राणयुक्त शरीर को देता है ।

अग्निष्वात्ता कौन पितर हैं

या नग्निदेव दहन स्वद्‌यति ते पितरो अग्निष्वात्ताः ।।

(श्रा० २१५+५।)

जिनके देह को अग्नि जलाता है वे पितर अग्निष्वात्त हैं।। यह जीवित पितर हैं या मृत इसको पाठकगण समझें ।।७।।

प्राच्या जानुदक्षिणतो निषद्येमं यज्ञमभिगृणोत विश्वे ।
माहिंसिष्ठ पितरः केनचिन्तो यद्व, आगः पुरुषता कराम ।।

(यजुर्वेद अ० १९ मं ६२)

हे पितरों तुम सब वामजांघ को सब प्रकार झुका कर दक्षिण को मुखकर बैठकर इस यज्ञ को अभिनन्दन करो। किसी प्रकार अपराध होने से हम पर मत क्रोध करो कारण कि चल चित्त होने से अपराध हम भूल से कर जाते है ।

ये निखाता ये परोप्ता ये दग्धा ये चोद्धिताः ।
सर्वांस्तानग्नि आवह पितृन्हविषे अत्तवे ॥

(अथर्व० का १८ मं ३४)

जो गाड़े गये जो जल में छोड़ दिये गये और जो स्वर्ग में चले गये हैं अग्नि उन सबको हवि भोजन करने के लिये पितृ कर्म में बुलाओ ॥३४॥

अपसव्येन हस्तेन निर्वपेदुदकंभुवि मनुस्मृति ॥

(अ० ३ श्लोक २१४)

अपसव्य होकर दक्षिण हाथ से पृथिवी पर पानी डालो ॥२१४॥ मृतक पितर ही अपसव्य होने पर जल ग्रहण करते हैं ॥

प्राचीनावीतिना सम्यगपसव्य मतन्द्रिणा ।
पित्र्यमानिधनात्कापि विधिवद्दर्भ पाणिना ॥

(मनु० अ० ३ श्लो० २७९)

दहिने कन्धे पर यज्ञोपवीत रखकर आलस्य रहित होकर दर्भ हाथ में ले अपसव्य होकर यथा शास्त्र मरण से लेकर सब कर्म पितृ, सम्बन्धी समाप्ति पर्यन्त करे । पितरो को श्राद्ध कब करना चाहिये इसे शत्पथ-ब्राह्मण निर्णय दिया है ।

अपराह्णः पितृणां तस्मादपराह्णेः ददाति ।

(शत्पथ २।४।२८)

तीसरा पहर पितरों के भोजन का समय हैं इसलिये पितरों के लिये तीसरे पहर में भोजन दिया जाता है यदि जीवित पितर को श्राद्ध मरने वाले तीसरे पहर भोजन दें तो दुर्दशा हो जाय । पितर जीवित पित्तर नहीं हैं इस पर शत्पथ निर्णय दे रहा है कि—

तिर इव हि पितरो मनुष्येभ्यः ।

(शतपथ० ब्रा० २।३।४।२)

पितर निश्चय मनुष्यों से अलग हैं ।

पितरों का स्थान कहां है ।

तृतीयाह प्रद्यौ रिति यस्यां पितर आसते ।

(अथर्वेद १८।२।४८)

सबसे ऊपर अन्तरिक्ष का तीसरा भाग सूर्य्यादि के प्रखर प्रकाश-वाला होने से प्रद्यौ कहाता है यहां पितरों का लोक है जिसमें पितर रहते हैं ।

ये शतं देवगन्धर्वाणामानन्दः ।

स एकः पितॄणां चिरलोक लोकानामानन्दः ॥

(तै० उ० आना० २ अ० ८)

जो देव गन्धर्वों के सैकड़ो आनन्द हैं वह चिरलोक वासी पितरों का एक आनन्द है ॥८॥

क्या ¡ इसी आनन्द से पितरों के पतन होने के भय से अर्जुन कहते हैं ।

पतन्ति पितरो ह्येषां लुप्त पिण्डोदकक्रिया ॥

(गीता० अ० १ श्लो० ४२)

युद्ध में मारे जाने पर उनके कुल में पिण्ड और जलदान की क्रिया लुप्त हो जाने के कारण उनके पितरों का पतन हो जाता है ॥

महाभारत में व्यास जी लिखते हैं

न तत्र वीराः जायन्ते नाऽरोग्यं न शतायुषः ।

न च श्रेयोऽपि गच्छन्ति यत्र श्राद्धं विवर्जितम् ॥

वहाँ वीर मनुष्य नहीं होते न वहाँ आरोग्यता रहती न वहाँ सौ वर्ष की आयु वाले मनुष्य ही होते । वहाँ के लोग सुमतिवान् नहीं होते जहाँ पितरों का श्राद्ध नहीं होता ॥

महाराजा दशरथ को श्राद्ध

(वाल्मीकी० अयोध्या० सर्ग १०३ श्लोक २८)

ततो मन्दाकिनीतीरं प्रत्युत्तीरे सराघवः ।

पितुश्चकार तेजस्वी निर्वापं भ्रातृभिऽ सह ॥

ऐङ्गुदं बदरैर्मिश्रं पिण्याकं दर्भ संस्तरे ।

न्यस रामः सुदुःखार्तो रुदन्ववचन मब्रवीत ॥२९॥

इदं भुङ्क्ष्व महाराज प्रीतो यद्दशना वयम् ।

यदन्नः पुरुषो भवति तदन्नास्तस्य देवताः ॥३०॥

मर्यादापुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी अयोध्यावासियों से जब सुना कि महाराज दशरथ का स्वर्गवास हो गया । उस समय मन्दाकिनी के किनारे आकर तेजस्वी भाइयों सहित राजा दशरथ का पिण्ड क्रिया करते हुए । इङ्गुदी और मिश्रित पिण्याक के पिण्य कुशाओं पर रखकर श्री रामजो दुःख से रोते यह वचन बोले ॥२९॥

कि हे महाराज जो वस्तु हम भोजन करते है उसका ही आप प्रसन्न हो भोग लगाइये क्योंकि जा अन्न पुरुष खाते वही अन्न उनके देवता खाते है ॥३०॥ यह मृतक पितर का श्राद्ध रामचण्द्र ने किया ।

श्राद्धे शारदः यह सूत्र है शरद ऋतु में श्राद्ध करे। जिसको आश्विन मास कहते हैं उसी के कृष्णपक्ष को पितर पक्ष कहते हैं और अभी भी धार्मिक सज्जन बराबर पितृ पक्ष मे श्राद्ध अवश्य करते हैं।

इन श्रुति, स्मृति, इतिहास, आदि प्रमाणों से मृतक पितरो का स्पष्ट श्राद्ध सिद्ध होता है, जीवित पितरों का नहीं ।

प्रश्नोत्तर

साधारण मनुस्यों से व्यर्थ के प्रश्न किये जाते हैं जिसका उत्तर वह नहीं दे पाते ।

उदाहरण—हम अपने पितरों को श्राद्ध में खोर, मालपूआ, पूरी, कचौड़ो, रसगुल्ला, रबड़ी के अनेक पदार्थो से श्राद्ध करते हैं इससे प्रश्न यह है कि यदि हमारे पितर चौरासो लाख योनियों में चाटो, मच्छर, सर्प, बिच्छू, गिरगिट, सुअर, कूकर, लौमडी, शृगाल, व्याघ्र, हाथी, घोड़े, पिशाच, राक्षस, गन्धर्व, किन्नर, वृक्ष, लता, पक्षी, पशू आदि किसी योनि में चले गये हों अथवा पुनः मन्युष्य बन गये हों तो उक्त योनियों में पैदा होने वाले पितरों को किस प्रकार श्राद्ध मिलता है ।

समाधान

वेदों और शास्त्रों में इस प्रश्न का समाधान कर चुके हैं वेदशास्त्र न पढ़ने से ही कुशंकायें उत्पन्न होती हैं श्राद्ध तो सबको इसी प्रकार होगा जेसा विधान है। वह किया हुआ श्राद्ध यमराज के यहाँ जाता है यमराज को भलीभांति यह मालूम है कि श्राद्ध करने वाले का

पितर किस योनि में गया है इसका ठीक पता लगाकर यमराज उसी योनि में। वहाँ खाद्य पहुँचायेगें जो उस जीव की खुराक है जो वह खाता है। वह श्राद्ध की खीर मालपुआ उसी रूप में उस जीव को भेजे जिस रूप में वह है। परन्तु यमराज उस पदार्थ को उस जीव के लि श्राद्ध के बदले वही पदार्थ देंगे जिसके योग्य वह है "उदाहरण—चींटी को चावल कन चीनी सत्तू, हाथी को पीपल, वट की डाली, गन्ना आदि बना दिया जाता है वही श्राद्ध पिशाच, राक्षस, व्याघ्र को मांस बना दिया जाता है। तात्पर्य यह है कि चौरासी लाख योनि में जन्म लेने वाले को वही खाद्य श्राद्ध के बदले में दिया जाता है जो उस जीव का आहार है व्यवस्था करने वाला यमरूप भगवान अन्तरयाकी जीवों के कर्मानुसार सब देते हैं उन्हें समस्त जीवों का ज्ञान है और वह सबका भरण-पोषण करने में समर्थ हैं। अतः इस प्रश्न का भी शमाधान हो गया।

"यदि हमारे पितर मरने के बाद वह नारायण स्वरूप ब्रह्मलीन हो गये (यद् गत्वान निवर्तन्ते तद्धाम परम मम) ब्रह्म पद को प्राप्त हो गये हैं तो उसे श्राद्ध क्यों किया जाय (समाधान) देखा जाता है कि कोई व्यक्ति अपने पिता के नाम १०० सौ रुपया मनियाडर भेजा और यदि भेजने वाले के पिता कहीं चले गये हों तो वह रुपया वापिस होकर उसी व्यक्ति को मिल जायगी जिसने भेजा है इसी प्रकार श्राद्ध करने वाले के पितर यदि किसी योनि में नहीं है तो श्राद्ध करने वाले को उसका फल मिल जाता है अतः श्राद्ध प्रत्येक व्यक्ति को करने से लाभ ही है। श्राद्ध अवश्य करो। उपरोक्त श्रुति, स्मृति, इतिहास आदि प्रमाणों से मरे पितरों का श्राद्ध सिद्ध है।

लेख का विस्तार न हो जाय इस लिये लेखनी को यहां ही विराम देता हूं।

संपादकः

शिवम्, सुन्दरम्

अमर वाणियाँ

१. मारना चाहते हो तो बुरी इच्छाओं को मारो।

२. जीतना चाहते हो तो तृष्णाओं को जीतो।

३. खाना चाहते हो क्रोध को खाओ।

४. पीना चाहते हो तो ईश्वर चिन्तन का सर्बत पीओ।

५. लेना चाहते हो तो आशिर्वाद लो।

६. जाना चाहते हो तो सत्संग में जाओ।

७. छोड़ना चाहते हो तो पाप एवं अत्याचार को छोड़ो।

८. बोलना चाहते हो तो मीठा वचन बोलो।

९. देखना चाहते हो तो अपने आपको देखो।

१०. सुनना चाहते हो तो ईश्वर की प्रशंसा सुनो।

११. अगर कुछ पढ़ना चाहते हो तो धर्म की पुस्तक पढ़ो।

१२. मनुष्य के पाँच शत्रु हैं काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, इनसे बचो।

१३. सत्य बोलो, हिंसा मत करो, दूसरे का धन, स्त्री देखकर मत ललचाओ।

—स्वामी अखण्डानन्द तीर्थ